

**पंचरात्र** पुं. (तत्.) 1. पाँच रातें 2. पाँच दिनों में संपन्न होने वाला एक यज्ञ 3. वैष्णव धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रंथ 4. संस्कृत कवि भास का एक नाटक 5. पाँच रातों में होने वाला कार्य।

**पंचलक्षण** पुं. (तत्.) 1. वे पाँच लक्षण जिनकी विद्यमानता तथा विवेचन से किसी ग्रंथ को पुराण की संज्ञा मिलती है 2. सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, देवताओं की उत्पत्ति और वंश परंपरा, मन्वंतर तथा मनु के वंश का विस्तार।

**पंचलड़ा** वि. (देश.) पाँच लड़ियों वाला जैसे- पाँच लड़ियों वाला हार।

**पंचवर्ण** पुं. (तत्.) 1. प्रणव (ओंकार) के पाँच वर्ण; 'अ', 'उ' 'म' 'नाद' तथा 'बिंदु' अथवा 'अकार', 'उकार' 'मकार', 'नाद' और 'ओंकार' 2. एक पर्वत का नाम 3. एक वन का नाम।

**पंचवर्षीय** वि. (तत्.) 1. पाँच वर्ष का, पाँच वर्षों तक चलने वाला जैसे- 'पंचवर्षीय योजना' 'पंचवर्षीय निवेश', 'पंचवर्षीय स्थानांतरण'।

**पंचवाद्य** पुं. (तत्.) पाँच प्रकार के वाद्य-तंत्र, आनद्ध, सुषिर, घन तथा वीरों का गर्जन जिनका उपयोग युद्ध क्षेत्र में किया जाता है।

**पंचवायु** पुं. (तत्.) शरीर में स्थित पाँच प्रकार के वायु; प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।

**पंचविंश** वि. (तत्.) 1. पच्चीसवाँ 2. पुं. (तत्.) विष्णु -इन्हें पच्चीस तत्त्वों से युक्त माना जाता है।

**पंचविंशति** वि. (तत्.) पच्चीस।

**पंचविधा** वि. (तत्.) 1. पाँच प्रकार का 2. पाँच गुणा।

**पंचवृक्ष** पुं. (तत्.) पाँच प्रकार के देववृक्ष- मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष तथा हरिचंदन।

**पंचशब्द** पुं. (तत्.) मांगलिक अवसर पर बजाए जाने वाले पाँच प्रकार के वाद्य-यंत्रों से निकलने वाले स्वर। ये वाद्य यंत्र हैं, तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा, तथा तुरही 2. पाँच प्रकार की ध्वनियाँ-

वेद=ध्वनि, मंगल-वाद्य ध्वनि, जयध्वनि, शंख-ध्वनि तथा निशानध्वनि 3. व्याकरण।

**पंचशिख** पुं. (तत्.) 1. सांख्य दर्शन के प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध आचार्य का नाम 2. कपिल मुनि के पुत्र कहे जाने वाले एक मुनि का नाम 3. एक प्रकार का वाद्य-यंत्र जिसे सिंघा बाजा भी कहा जाता है 4. सिंह।

**पंचशील** पुं. (तत्.) बौद्ध धर्म में बताए गए शील के पाँच लक्षण- अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य, मदय निषेध, चोरी न करना (अस्तेय) 2. आधुनिक संदर्भ में भारत तथा चीन की 1954 ई. में संपन्न संधि जिसके पाँच घटक हैं 1. राज्य की अविच्छिन्नता और प्रभुत्व के लिए परस्पर समादर 2. अनाक्रमण 3. आंतरिक मुद्दों या मामलों में हस्तक्षेप न करना 4. समता और पारस्परिक लाभ तथा 5. शांतिमय सह अस्तित्व।

**पंचषष्टि** वि. (तत्.) पैंसठ, साठ से पाँच ज्यादा।

**पंचसर** पुं. (तत्.) 1. कामदेव के पाँच बाण 2. पाँच बाणों को धारण करने वाला-कामदेव।

**पंचसूना** स्त्री. (तत्.) गृहस्थ जीवन या सामान्य कार्यों में अनजाने में ही होने वाली पाँच प्रकार की हिंसा; चूल्हा जलाने, गेहूँ आदि को चक्की में पीसने, झाड़ू लगाने, घरेलू सामान को कूटने तथा पानी का घड़ा रखने में छोटे कीड़ों की हिंसा होना। (चूल्हा, चक्की, झाड़ू, सिलबट्टा ओखली तथा पानी के घड़ा से होने वाली हिंसा) मनु ने इन्हें चुल्की, पेषणी, उपस्कर, कंडनी तथा उदकुंभ कहा है।

**पंचस्नेह** पुं. (तत्.) पाँच चिकने (स्निग्ध) पदार्थ, घी, तेल, चरबी, मज्जा तथा मोम।

**पंचहजारी** पुं. (देश.) 1. पाँच हजार सैनिकों की सेना का अधिपति 2. मुगल साम्राज्य में प्रभावशाली लोगों को मिलने वाली एक पदवी।

**पंचांग** पुं. (तत्.) 1. पाँच अंगों के सम्मिलित होने की स्थिति या संलग्नता; (घुटने, सिर, हाथ, छाती और आँखें) 2. पाँच अंगों का बना हुआ 3.